रात्रिक्लास 26-2-68 ओमशान्ति शिवजयन्ति

****

बच्चे बैठे हो यह तो बुधि में होगा अभी बाबा आये हुये हैं पुराने सम्बन्ध से खत्म कर नये सम्बन्ध में ले जाने। हम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जाने वाले हैं। यह भी बड़ी खुशी की बात है ना। भगवान पढ़ाते हैं यह भी खुशी की बात है। इतने सब बातें खुशी देने लिए बाप समझाते रहते हैं। फिर भी कहते हैं बाबा मुरझाये जाते हैं। स्थिरियम रहती ही नहीं। कारण? बाप से जागीर का भी मालूम हुआ, यह भी निश्चय है पुरानी दुनिया खत्म होनी है, स्वर्ग में तो जाने लिए तो खुशी होती है ना। जो भी मरते हैं कहते हैं स्वर्ग पधारा। परन्तु स्वर्ग में क्या पद वह कुछ भी पता नहीं। स्वर्ग कहा जाता है नईदुनिया को। यह तो नई दुनिया नहीं है। कई समझते हैं स्वर्ग तो यहां ही है। हम स्वर्ग में बैठे हैं। आगे नर्क था अभी स्वर्ग हुआ है। मिट्टी होने वाले परस तो आजकल इतने पैसे हैं जो मिट्टी बदली सोना चांदी, अशर्फियां ही अशर्फियां है। परन्तु स्वर्ग में तो दुःख का नाम नहीं होता है। यहां तो दुःख होती रहती है। अभी बच्चों ने परिचय तो सब जगह दिया ही होगा। अजन तो बहुत जगह पैगाम देने जाना है। तुम हरेक पैगम्बर मैसेन्जर हो। और फिर पण्डे भी हो। पण्डे से भी मैसेन्ज देने वाला अच्छा। सभी को कहो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। भक्ति मार्ग भी आत्मायें परमात्मा को याद करती है। बुलाती रहती है। समझते हैं उनके आने से स्वर्ग स्थापन होगा। आत्मा जानती है बाप आकर स्वर्ग ही स्थापन करेंगे। वह आते ही हैं स्वर्ग स्थापन करने। फिर नर्क न रहेगा। न जब कि नर्क तो स्वर्ग हो नहीं सकता। बुलाते भी सब हैं। साधू-सन्त आद सब बुलाते रहते हैं। तुमको तो बहुतों को मैसेन्ज देना है। भगवान आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। पतितों को पावन बनाते हैं। दुःखहर्ता-सुखकर्ता है ना। 21 पीढ़ी तो भगवान ही सुख देते हैं। मनुष्य मनुष्य को दे न सके। कितनी सहज बातें हैं। फिर भी समझने में कितना समय लग जाता है। 10 वर्ष में भी प्रतिज्ञा कर फिर पतित बन पड़ते हैं। अर्थात बाप को भूल गये। तुम कहेंगे कल्प पहले मिशल ऐसा हुआ। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग पर। पुरुषार्थ कर रहे हो। श्रेष्ठाचारी बनाने वाला मिला है। सतयुग की स्थापना करते हो हैं भगवान। तो अभी तुमको सहज समझ में आता है। आज के दिन बच्चों ने बहुत सर्विस की होगी। समाचार आते रहेंगे। तुम रूहानी लेना के सिपाही हो ना। समाचार सुनते2 फिर दिल होगी हम भी जाकर कोई का कल्याण करें। हीरे जैसा वह बनेंगे जो सिर्फ सर्विस कर बहुतों को आप समान बनाते हैं। कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है। कोई भी बन्धन नहीं। न पति न बाल बच्चे। निर्बन्धन है। कुमारियों का भी झुण्ड तैयार होना चाहिए जो कुमारियों की सर्विस कर उन्हों को बचा ले। विषयसागर में जाकर कुदते हैं उनको बचा लेंगे। जिनमें ज्ञान है वही यह सर्विस करेंगे। ज्ञान है तो अपने हमजिन्स को बचाना है। एक है विषय सागर से बचाना दूसरा है विषय सागर में गिरने से बचाना। जो गिरे हुये हैं उनको निकालना है। तुम्हारा काम है दूसरों को विषय सागर में गिरने से बचाना। नहीं तो खुद बच के कर ही क्या किया। कुमारियां जिन में ज्ञान है उनको आना चाहिए अपने हमजिन्स को बचायें। खास कर कुमारियों को कुमारियों पर अटेन्शन देना चाहिए। गिराने से बचाना चाहिए। यह हमारा फर्ज है। कोई को भी गटर में गिरने से बचाना चाहिए। अभी क्षीर सागर बह रहा है। एक तरफ है विषय सागर दूसरी तरफ है क्षीर सागर। तो क्षीर सागर में जाना चाहिए या विषय सागर में।

भक्ति मार्ग में आशीर्वाद वा कृपा आद मांगते हैं। यहां तो कृपा आद की बात ही नहीं। माया किसको टक्के टेकेंगे। बिन्दी है ना। बड़ी चीज़ हो तो माया भी टेको। छोटी चीज़ को तो माया भी क्लेक न सके। हाथ है किसको जोड़ेंगे। रेसपान्स तो करेंगे नहीं। यह भक्ति-मार्ग की निशानियां सब गुम हो जाती है। हाथ जोड़ना यह भक्ति मार्ग हो जाता है। बहिन भाई हैं घर में हाथ जोड़ते हैं असम्भव क्या। बच्चा मांगते ही हैं वारिस बनाने लिए। तो बच्चा मालिक ठहरा ना। इसलिए बाप बच्चे को नमस्ते को करते हैं। बाप तो बच्चों का सर्वेन्ट है न अच्छा मीठे 2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।